B.A. History Hons, Part-II

Paper: III, Unit-I, Date: 27.07.2020

Session: सल्तनतकाल के इतिहास के स्त्रोत

भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के बाद भारतीय इतिहास कला में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। मुस्लिम इतिहासकारों ने ऐतिहासिक लेखन में अरबों की सिंध विजय (712 ई०) के समय, ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई वे अधिकांश अरबी भाषा में लिखे गये थे। अरबों की सिंध विजय का ऐतिहासिक वृत्तांत लिखने वाला पहला इतिहासकार 'मुहम्मद अली कूफी' था जिसकी पुस्तक 'चचनामा' अरबों की सिन्ध विजय पर विस्तृत प्रकाश डाला है। दूसरा महत्वपूर्ण इतिहासकार 'मुहम्मद मासूम' था जिसने 'तारीख-ए-सिन्ध' नामक की रचना की थी।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना (1206 ई०) के बाद फारसी भाषा में ऐतिहासिक लेखन की परम्परा का शुभारंभ हुआ। सल्तनत इतिहास के पुरातात्विक स्त्रोत को निम्नलिखित रूप से विभाजित कर सकते हैं:-

'स्मारक': सल्तनतकालीन भवनों, मूर्तियों एवं भग्नावशेषों से तत्कालीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। द्रविड़ शैली में निर्मित शैली कांचीपुरम् का कैलाश मंदिर, तंजावूर में राज प्रथम द्वारा बनवाया गया। मथुरा, उड़ीसा, आबू के मंदिरों से राजपूतकालीन स्थापत्य कला, मूर्तिकला और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालता है।

'मुद्रा': मुद्राएँ किसी भी काल की आर्थिक स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन है। सल्तनत कालीन सिक्कों से तत्कालीन सुल्तानों और शासकों के समय की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। सिक्कों से तत्कालीन शासकों की अभिरुचि, धार्मिक स्थिति, कला, व्यापार एवं साहित्य एवं वाणिज्य पर प्रर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

'अभिलेख': सल्तनत काल के प्रारंभिक भाग विशेषकर दक्षिण भारत के लिए अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिलेख शिलाओं, स्तंभों, धातु-पत्रों, मूर्तियों और मंदिरों की दीवारों पर प्राप्त होते हैं। इन अभिलेखों से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का ज्ञान होता है। मध्यकालीन भारत के इतिहास के स्त्रोत कहीं-कहीं पर संक्षिप्त और अस्पष्ट हैं। अब इतिहास के मोटा-मोटी तीन स्त्रोत रहे हैं- साहित्यक स्त्रोत:

'महत्वपूर्ण कालानुक्रम': भारत में मुस्लिम शासक कालानुक्रम लिखने वालों में तुर्क या उपाधानों एवं दरबारी इतिहासकारों को बादशाह के क्रियाकलापों को लिखने के लिए नियुक्त किये हुए थे। ये कालानुक्रम राजनीतिक घटनाओं, जगहों, त्योहारों, प्रथाओं, दोनों हिन्दु और मुस्लमानों के जीवन शैली पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते थे और साथ-ही-साथ नागरिक प्रशासन पर प्रकाश भी डालते थे।

कुछ महत्वपूर्ण कालानुक्रम ये थे- 'मिनहाज-उस सिराज के तबाकत-ए-नासिरी' :: जियाउद्दीन बरनी के तारीख-ए-फिरोजशाही और फतवा-ए-जहांदरी ... अफीफ के शम्स-ए-सिराज, :: अमीर खुसरो की तारीख-ई-अलाई।

'मिनहाज-उल-सिराज के तबाकत-ए-नासिरी': सिराज नसीरुद्दीन के मुख्य काजी और 'सदर-ए-जहान' था। सिराज की यह पुस्तक कलहण के बाद की रचना है। 'तबाकत-ए-नासिरी' में भी इस पर विचार किया गया है

∴ ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीख-ए-फिरोजशाही 'और 'फतवा-ए-जहांदारी'. यदि बरनी हमारी सूचना के प्रमुख स्रोत हैं तो उनकी 'तारीख-ए-फिरोजशाही और 'फतवा-ए-जहांदारी' शीर्षक कृतियाँ उन विवादों की जड़ भी है जो उस युग से संबंधि आधुनिक इतिहास लेखन में परेशानी के कारण बनी हुई है।

∴ अफीफ के 'शम्स-ए-सिराज' बरनी के रचना के लगभग पचास वर्ष बाद अफीफ ने भी इसी नाम की पुस्तक लिखी। अफीफ ने दावा किया कि उनकी रचना बरनी के कृतित्व की पूरक है। किन्तु इनका स्वरूप एक दम भिन्न है क्योंकि जिन हालातों में इसकी रचना की गई है वे एक दम भिन्न है। इसके ठीक बाद ही सल्तनत के ढहते हुए ढांचे के तैमूरों ने अंतिम धक्का देकर समाप्त कर दिया।

∴ अमीर खुसरो की तारीख-ए-अलाई एवं अन्य रचनाएँ : उस काल में लेखकों में अमीर खुसरो का नाम उल्लेखनीय है हालाँकि वे इतिहासकार नहीं थे। उन्हें खुद छह सुल्तानों के अन्तर्गत सेवा का मौका मिला था, आरंभ में बलबन के बड़े पुत्र मुहम्मद की सेवा में रहे। मंगोलों के साथ एक मुकाबला में मुहम्मद में मुहम्मद मारा गया था। इस मुकाबले में अमीर खुसरो को भी बंदी बना लिया गया था। लेकिन वे जेल से निकल भागे और बलबन के राजदरबार से संबद्ध हो गये। ऐतिहासिक विषय को लेकर उनकी पहली मसनवी 'किरान-उस-सादै' जिसे जिन्होंने 1289 में लिखी थी। मिफता-उल-फतूह' की रचना उन्होंने 1291 में की। 'खजाइन-उल-फतूह' में जिसे 'तारीख-ए-अलाई' के नाम से जाना जाता है। इसमें अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल के पहले 15 वर्षों का वर्णन है। खुसरो की अंतिम ऐतिहासिक मसनवी है 'तुगलुकनामा' इसमें खुसरो शाह के विरुद्ध गयासुद्दीन तुगलक की विजय का चित्रण है। धार्मिक रंग में प्रस्तुत किया गया है।

∴ अभिलेख : अभिलेख इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। ये परम्परा और साहित्य के अपेक्षा ज्यादा विश्वसनीय है। लेकिन ये सामान्यतः धातु के प्लेट और पत्थर पर मंदिर, मस्जिद और मकबरा के दीवारों पर पाये जाते हैं। ये उर्दू, फारसी, तमिल, संस्कृत और कन्नड़ भाषाओं में लिखे गये हैं। अभिलेख से महत्वपूर्ण सूचनाएं साथ ही साथ इसके लेखकों, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक स्थितियों की भी जानकारी मिलती है।

∴ विदेशी यात्राओं का विवरण : मध्यकालीन भारत के सल्तनत कालीन इतिहास के लिए बहुत ही अहम स्रोत है। विदेशी यात्रियों में इब्न बतूता का नाम उल्लेखनीय है। वह मोरक्को यात्री एवं 'रेहला' का लेखक था। वह भारत में 1333 से 1346 तक रहा। मुहम्मद तुगलक उसे काजी के रूप में नियुक्त किया और भारत के लिए चीन में राजदूत बनाया था। 1420 ई० में इटली निवासी निकोलोकोन्टी भारत आया और उसके विजय नगर साम्राज्य का साम्राज्य में विद्यमान बहुपत्नीवाद, शहरों की विशालता, सती प्रथा इत्यादि का वर्णन किया है।

भारत मध्यकालीन इतिहास खासकर सल्तनत काल के इतिहास के उपर्युक्त स्रोतों के निष्कर्ष में यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि उक्त स्रोतों में अभिलेख ज्यादा विश्वसनीय एवं प्रमाणित स्रोत है।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी